

सहायक सान्धिनोट -

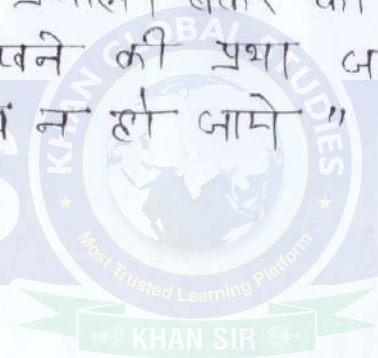
- महत्व में सकारात्मक पहलू का उल्लेख करें।

- परिणाम / प्रभाव में सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पहलू पर उल्लेख करें।

प्र० ब्रिटिश भारत में सहायक सान्धि की नीति क्या थी?
तेलंगली ने किस-किस राज्यों से सान्धि की।
इससे क्षेत्रों को क्या लाभ हुआ।

"सहायक सान्धि प्रणाली बकरे को तब तक खिला
पिला कर रखने की प्रथा जब तक वो जिन्ह
बालि के मोया न हो जाये"

KGS IAS



आंग्ल-मराठा युद्ध

प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध - (1775-1782) :-

- 1772 में पेशवा माधवराव की मृत्यु के पश्चात् रघुनाथराव पेशवा बनना चाहते थे लेकिन माधवराव के पुत्र नरायणराव को पेशवा बनाया गया नरायणराव की शीघ्र मृत्यु हो गई इसके पश्चात् माधवराव द्वितीय को पेशवा बनाया गया।
- 1775 ई. में रघुनाथराव ने अंग्रेजों के बाम्बे परिषद से पेशवा बनने के लिए सूरत की सन्धि की।
- इस सन्धि के पश्चात् मराठों से युद्ध प्रारम्भ हुआ लेकिन वारेन हेस्टिंग्स मराठों से युद्ध नहीं चाहते थे।
- इस उपदेश से 1776 में पेशवा के साथ पुरन्दर की सन्धि की गई।
- कम्पनी के डायरेक्टरों के निर्देश पर मराठों से युद्ध करना पड़ा।
- अन्ततः 1782 में सालबई की सन्धि के द्वारा युद्ध समाप्त हुआ (बराबरी पर युद्ध समाप्त हुआ)

द्वितीय आंग्ल मराठा युद्ध - (1803-1805) :-

कारण :-

- कम्पनी की महत्वाकांक्षा (मैसूर युद्ध के पश्चात्)
- नेपोलियन की आक्रामक नीति, वेल्लजली की प्रभावितता थी भारतीय साम्राज्य को सुरक्षित रखना।
- मराठों की आन्तरिक परिस्थितियाँ जैसे- पेशवा पर प्रभाव को लेकर सिंधिया एवं होल्कर के बीच संघर्ष। (पेशवा, बाजीराव II)
- इसी क्रम में होल्कर शासक के भार की हल्का कर दी गई। प्रतिक्रिया स्वरूप होल्कर ने पूना पर कब्जा कर लिया।
- पेशवा ने अंग्रेजों से मदद माँगी और 1802 ई. में बसीन या बसरी की सहायक सन्धि पर हस्ताक्षर किया। एक प्रकार से पेशवा ने मराठों की संप्रभुता को गिरवी रख दिया। मराठा सरदारों ने अंग्रेजों को चुनौती दी।

परिणाम :-

- मराठों की पराजय हुई 1803 ई. में अंग्रेजों ने भोंसले से देवगांव की सन्धि की और सिंधिया से सुरजीअर्जुन गोंव की सन्धि की।

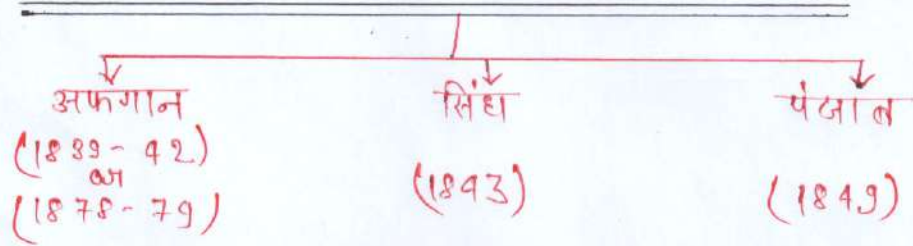
- 1804-1805 ई० में होल्कर से युद्ध हुआ और 1805 में राजपुर घाट की सन्धि के द्वारा युद्ध समाप्त हुआ।

तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1817-18) :-

लार्ड होस्टिंग्स
(1813-1823)

- पेशवा ने युद्ध की शुरुआत की, भलग-भलग लड़ाइयों में पेशवा, भोंसले, सिंधिया की पराजय हुई।
- पेशवा का पद समाप्त कर दिया गया, पेशवा को पेंशन दिया गया और कानपुर के नजदीक रहने के लिए बिठूर नामक स्थान दिया।
- सतारा में मराठों का एक छोटा सा राज्य स्थापित किया गया और शिवाजी के वंशज को शासक बनाया गया।
- तीसरे युद्ध से पूर्व लार्ड होस्टिंग्स ने पिंडारियों के विरुद्ध अभियान चलाया। पिंडारी लुटेरों का दल था जो मराठों के साथ सैनिक अभियान में जाता करते थे।

उत्तर पश्चिम में साम्राज्य विस्तार



- उत्तर पश्चिम में भारत की प्राकृतिक सीमा में दो महत्वपूर्ण राज्यों थे, सिंध एवं पंजाब का राज्य। प्राकृतिक सीमा से बाहर अफगानिस्तान एवं रूस के राज्य थे और अफगानिस्तान की सीमा के नजदीक रूसी प्रभाव का विस्तार हो रहा था तथा यूरोप में ब्रिटेन एवं रूस के बीच शत्रुता थी।
- तृतीय मराठा युद्ध के पश्चात् कम्पनी उत्तर पश्चिम में साम्राज्य विस्तार को लेकर सक्रिय हुई।
- साम्राज्य विस्तार को लेकर दो प्रकार के दृष्टिकोण प्रचलित थे (अफगानिस्तान को लेकर)
प्रथम - अफगानिस्तान पर प्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित किया जाए इससे भारतीय राज्यों पर भी प्रभुत्व मजबूत होगी, रूस की भारतीय सीमा से दूर रखने में सफलता मिलेगी।

मध्य एशिया में व्यापार का विस्तार होगा।

- अफगानिस्तान पर प्रत्यक्ष नियंत्रण की नीति को अग्रगामी नीति भी कहा जाता है
- अफगानिस्तान के साथ दोनों युद्ध इसी नीति का परिणाम था
- प्रथम युद्ध में अंग्रेजों को काफी नुकसान उठाना पड़ा लेकिन इसके पश्चात अंग्रेजों ने अफगान नीति में परिवर्तन किया इसे कुशल अकर्मण्यता की नीति कहा जाता है इसके अन्तर्गत अफगानिस्तान से मित्रवत संबंध बनाए रखने पर बल दिया गया। इससे रूस की भारत की सीमा से दूर रखा जा सके।

- प्रथम युद्ध के पश्चात अंग्रेजों की प्रतिष्ठा को ठेस पहुँची तथा रूस का खतरा अभी भी बना हुआ था इसी पृष्ठभूमि में अंग्रेजों ने सिंध एवं पंजाब के विरुद्ध आक्रमक नीति अपनाई।